

निदेशक महोदय की कलम से

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान परिवार की ओर से



मुझे टी.एफ.आर.आई. समाचार पत्र के चतुर्थ अंक (जुलाई-अगस्त, 2022) को साझा करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।

मुझे आशा है कि यह समाचार पत्र वानिकी अनुसंधान से संबंधित शोधकर्ताओं, विभिन्न हितधारकों और नीति निर्माताओं के लिए सहायक होगा।



Rajeshwar Rao

डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए.आर.एस.
निदेशक, टी.एफ.आर.आई., जबलपुर

अंतर्निहित वस्तु

- प्रमुख आयोजन 1
- वैज्ञानिक का कोना 2
- आयोजन 12
- अनावरण 13
- प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण 14
- कार्यशाला ,सेमिनार ,महत्वपूर्ण बैठकें 15
- नए प्रकाशन 16
- आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग, उ.व.अ.सं., जबलपुर में बिक्री के लिए उपलब्ध पौधों की प्रजातियां एवं संख्या 17
- विश्राम गृह सुविधा एवं शुल्क 18

प्रमुख आयोजन

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में 15 जुलाई, 2022 को वन महोत्सव के अवसर पर वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। आयोजन के दौरान टी.एफ.आर.आई., जबलपुर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाने की पहल के तहत मोरिंगा, बेल, आम, जामुन, मौलश्री आदि सहित उच्च न्यूट्रिएशुटिकल मूल्य वाले पेड़ प्रजातियों को रोपित किया गया। डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए.आर.एस., निदेशक महोदय ने वृक्षारोपण गतिविधि के लिए बायो-डिग्रेडेबल बैग के उपयोग हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये।



टी.एफ.आर.आई., जबलपुर में स्वतंत्रता दिवस-2022,समारोह

भारत का 76 वां स्वतंत्रता दिवस टी.एफ.आर.आई. जबलपुर और केंद्र एफ.आर.सी.-एस.डी., छिंदवाड़ा में मनाया गया। इस अवसर पर श्रीमती नीलू सिंह, समूह समन्वयक (अनुसंधान), टी.एफ.आर.आई. ने ध्वजारोहण किया एवं शुभकामनाएं देते हुए ध्वज के तीन रंगों के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने हमारे पर्यावरण को बचाकर और अधिक से अधिक पेड़ लगाकर राष्ट्र की सेवा करने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया। "आजादी का अमृत महोत्सव" के तहत आयोजित कार्यक्रमों के उत्सव के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए गए।



यू.एस.ए.आई.डी., आई.सी.आर.ए.एफ. द्वारा वित्त पोषित "भारत में वनों के बाहर के पेड़"

बैठक के दौरान टी.ओ.एफ.आई. के कंसोर्टियम भागीदार

टी.एफ.आर.आई. ने ऑनलाइन मोड के माध्यम से 5 जुलाई, 26 जुलाई और 29 अगस्त, 2022 को आयोजित "नर्सरी के प्रत्यायन और गुणवत्ता रोपण सामग्री के प्रमाणन" पर टी.एफ.आर.आई. कंसोर्टियम पार्टनर्स, एन.सी.सी.एफ. और सी.आई.एफ.ओ.आर.आई.सी.आर.एफ. द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित विचार-मंथन सत्र में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस अवसर पर डॉ. ननिता बेरी ने टी.एफ.आर.आई. कार्य और भविष्य की योजना प्रस्तुत की। इस आयोजन में देश भर से 70 से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया। टी.एफ.आर.आई. लक्षित राज्यों (असम और ओडिशा) के लिए राज्य-विशिष्ट क्यू.पी.एम. डिलीवरी रोड मैप के प्रारूप पर काम कर रहा है।



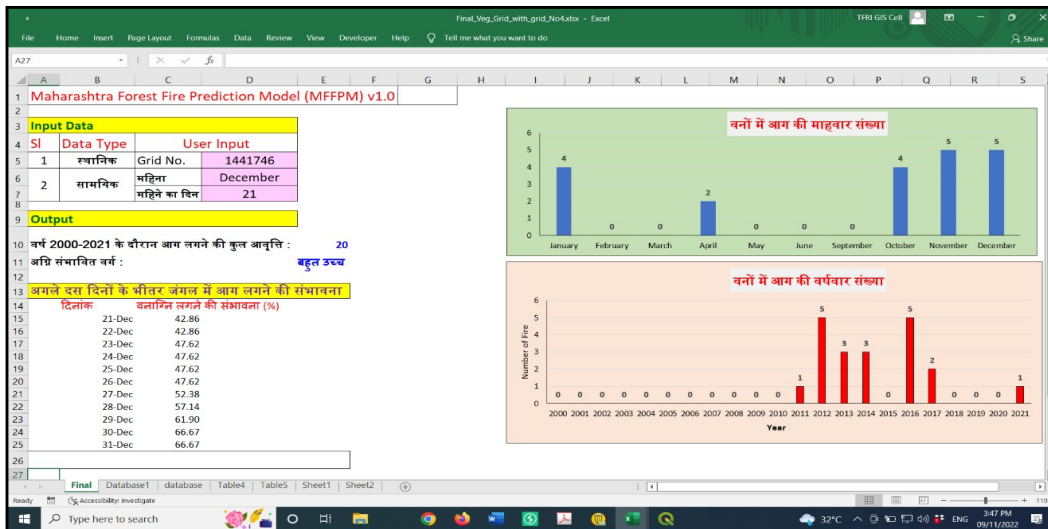
बैठक के दौरान टी.ओ.एफ.आई. के कंसोर्टियम भागीदार

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान ने दो पेटेंट दायर किए –

- भारतीय पेटेंट आवेदन संख्या 202221045676 दिनांक 10.08.2022 भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद के नाम पर – उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने लॉन्गहॉर्न बीटल को फंसाने के लिए एक फनल आधारित जाल से संबंधित पेटेंट दिया। पेटेंटकर्ता : डॉ. नितिन कुलकर्णी
- भारतीय पेटेंट आवेदन संख्या 202221045727 दिनांक 10.08.2022 भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद के नाम पर – उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने लॉन्गहॉर्न बीटल्स को फंसाने के लिए एक डिब्बे पर आधारित जाल से संबंधित पेटेंट दिया। पेटेंटकर्ता : डॉ. नितिन कुलकर्णी

महाराष्ट्र के लिए एक संभाव्यता आधारित जंगल की आग की भविष्यवाणी मॉडल विकसित करना

एक सहज ज्ञान युक्त ग्राफिकल यूजर इंटरफेस (जी.यू.आई.) के साथ एक माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल-आधारित टूल को जंगल की आग के मासिक और वार्षिक विवरण, पिछले 21 वर्षों में जंगल की आग की कुल संख्या और अगले के लिए पिक्सेल-वार संभावना की कल्पना करने के लिए विकसित किया गया है। ऐतिहासिक MODIS की आग घटना डेटा का उपयोग करते हुए 10 दिन इनपुट के रूप में महीने और स्थान के दिन का उपयोग करते हुए, MODIS पिक्सेल में आग लगने की संभावना की गणना की जाएगी। इससे वन महकमें के संबंधित कर्मचारी, जिन्हें इसकी सख्त जरूरत है, वे अपनी प्रतिरोध रणनीति को बेहतर बनाने में सक्षम होंगे।



जी.यू.आई., महाराष्ट्र वन
अग्नि भविष्यवाणी मॉडल

(एम.एफ.एफ.पी.एम.) अ1.0
का दृश्य

श्री धीरज गुप्ता, वैज्ञानिक डी

भारत में विभिन्न कोयला खानों का तृतीय पक्ष पर्यावरण लेखा परीक्षा

कोयला खनन क्षेत्र में पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए, भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (आई.सी.एफ.आर.ई.), देहरादून को कई कोयला खनन कंपनियों से देश भर में फैली अपनी-अपनी कोयला खदानों की त्रिपक्षीय लेखा परीक्षा करने के लिए परियोजनाएँ प्रदान की गई हैं। सदस्य के रूप में आई.सी.एफ.आर.ई. विशेषज्ञों की टीम जिसने पर्यावरण प्रदूषण के शमन के लिए पर्यावरण मंजूरी (ई.सी.) अनुमोदन में निर्धारित शर्तों की समीक्षा तथा परियोजना अनुमोदन शर्तों के अनुपालन और खदान के अन्य आवश्यक अनुमोदनों का मूल्यांकन करके मौजूदा स्तरों का मूल्यांकन किया। स्थल निरीक्षण के माध्यम से निर्धारित मानकों के संबंध में वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण की समीक्षा की गई, जो कि ई.सी. में निर्धारित उपायों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक थीं, ताकि खान के पर्यावरण प्रदर्शन में सुधार किया जा सके और व्यक्तिगत पर्यावरण लेखा परीक्षा प्रदान की गई। वायु गुणवत्ता निगरानी, ध्वनि गुणवत्ता निगरानी और पानी की गुणवत्ता (सतही जल, भूजल, गंदे पानी और अपशिष्ट) की निगरानी क्षेत्र से संबंधित रिपोर्ट तैयार की गई। जैसे कि दीपक ओपन कास्ट परियोजना खानों की तुलना में 5 अलग-अलग (ओ.सी.पी.), साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, छत्तीसगढ़, शारदा हाईवॉल माइंस और साउथ ईस्ट की धनपुरी ओ.सी.पी माइंस आर.एन. कोलफील्ड्स लिमिटेड एस.ई.सी.एल., मध्य प्रदेश और मनुगुरु ओ.सी.पी. और पद्मावती खानी अंडरग्राउंड माइंस ऑफ सिंगरेनी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एस.सी.सी.एल.), तेलंगाना खानों के लिए आई.सी.एफ.आर.ई., देहरादून द्वारा निगरानी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।



मनुगुरु ओ.सी.पी., तेलंगाना के खनन अधिकारियों के साथ चर्चा और विचार-विमर्श



शारदा हाईवॉल माइंस, एस.ई.सी.एल., मध्य प्रदेश का साइट पर फील्ड निरीक्षण



पद्मावती खानी अंडरग्राउंड माइन्स, एस.सी.सी.एल., तेलंगाना में उपचारित गंदे पानी की क्षेत्र पर जल गुणवत्ता मूल्यांकन (पी.एच.)



पद्मावती खानी यूजी माइंस, एस.सी.सी.एल., तेलंगाना के स्रोत छोर (भूमिगत) पर किए गए धूल दमन उपायों का निरीक्षण

मरुस्थलीकरण और सूखे की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रकृति आधारित समाधान

मरुस्थलीकरण और सूखे की चुनौतियों से निपटने के लिए प्रकृति आधारित समाधान चुनने में जागरूकता पैदा करने के लिए चंबल क्षेत्र के किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया एवं भूमि निम्नीकरण को कम करने के लिए चंबल के बीहड़ों में और उसके आसपास वनीकरण एवं वनरोपण कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता पर बल दिया गया। मुरैना जिले के नयापुरा उसेठ, भीलपुर, ईशाह हवेली स्थित तीन ग्रामों के किसानों ने सक्रिय रूप से बातचीत की और अपने खेत की मेढ़ पर स्वेच्छा से वृक्षारोपण भी किया। उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान ने ए.आई.सी.आर.पी.-24 परियोजना के तहत मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने और "आजादी का अमृत महोत्सव" समारोह के हिस्से के रूप में इस जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।



श्री. एम. राजकुमार, वैज्ञानिक डी एवं श्री राघवेंद्र सिंह, तकनीकी अधिकारी

हल्दीना कॉर्डिफोलिया (हल्दू) के बीजों के अंकुरण का बर्ताव

हल्दीना कॉर्डिफोलिया एक पर्णपाती पेड़ है, जो कि 20 मीटर से अधिक उँचाई तक बढ़ सकता है। यह एक आयुर्वेदिक औषधीय पौधा है, जिसका उपयोग त्वचा रोगों, घावों, उल्टी, आंतों के कीड़े, अपच और यकृत विकार आदि रोगों के उपचार के लिए किया जाता है। मध्य भारत के तीन राज्यों – मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ से एच. कॉर्डिफोलिया के तीस चयनित पेड़ों के बीज अप्रैल और मई के महीनों में एकत्र किए गए थे। इन बीजों को मदर बेड और ट्रे में बोया गया था। बुवाई के 10 दिनों के बाद, बीज ट्रे में अंकुरित होने लगे, जबकि मदर बेड में बोए गए बीजों को अंकुरित होने में लगभग 1 महीने का समय लगा।

रोपाई के प्रारंभिक चरण में बार-बार पानी देने की आवश्यकता होती है किंतु जल जमाव की स्थिति नहीं होनी चाहिए। दो महीने की आयु प्राप्त करने के बाद, ट्रे से रोपाई को पॉलीबैग में स्थानांतरित किया गया। जिसमें मिट्टी, रेत और जैविक उर्वरक का मीडिया मिश्रण 3: 1: 1 के अनुपात में रखा गया। विभिन्न स्थानों से प्राप्त इन उगाए गए पौधों को अग्रिम मूल्यांकन हेतु खेतों में लगाया जाएगा।



ट्रे में बीज बोना



पॉलीबैग में रोपे गए पौधे



पौधे में पानी देना

श्री निखिल वर्मा, वैज्ञानिक बी

लैंटाना कैमरा हटाने का प्रभाव

टी.एफ.आर.आई. परियोजना दल ने जुलाई के अंत में बस्तर वन प्रमंडल, छत्तीसगढ़ का भ्रमण किया। दल के भ्रमण के दौरान लैंटाना कैमरा फूलने और फलने की अवस्था में था, जिससे ज्ञात हुआ कि एक फल के डंठल में प्रति डंठल औसतन 25 से 33 बीज पैदा करने की क्षमता होती है। प्रति डंठल प्रति पुष्पक्रम में बड़ी संख्या में बीज नए आवासों में इसकी आक्रमण क्षमता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।



लैंटाना कैमरा का फूलना



अपरिपक्व फल विकास



फलों के डंठल

हालांकि, शोरिया रोबस्टा और डायोस्पायरोस मेलानोक्सिलॉन का प्रशंसनीय उत्थान लैंटाना हटाए गए वन क्षेत्रों में देखा गया, जबकि ओजिनिया ओजेनेंसिस, एनोजिसस लैटिफोलिया, प्रोविया टिलियाफोलिया, फाइलेन्थस एम्ब्लिका, और टैरोकार्पस मासुपियम को उपचारित क्षेत्र में नई पुनर्जीवित प्रजाति के रूप में पाया गया।



वनस्पति का विस्तृत विवरण का कार्य



टी.एफ.आर.आई. और डी.डब्ल्यू.आर. टीम के साथ, एस. एफ.डी. स्टाफ, छत्तीसगढ़

श्रीमती नीलू सिंह, वैज्ञानिक-जी, एवं जी.सी.आर., श्री राठौड़ दिग्विजयसिंह उ., एवं श्री अजिन शेखर, वैज्ञानिक-बी

खरपतवार पौधों की प्रजातियों का ऑकलन और निगरानी

देश के विभिन्न वन्य क्षेत्रों में प्रमुख खरपतवार विदेशी पौधों की प्रजातियों के प्रबंधन के लिए रणनीति तैयार करने के लिये मध्य प्रदेश के 5 वनमंडलों में 0-15 सेमी, 15-30 सेमी और 30-45 सेमी की गहराई पर पादप-सामाजिक परक सर्वेक्षण और खरपतवार युक्त और खरपतवार मुक्त दोनों क्षेत्रों से मृदा नमूनों को एकत्रित किया गया। टी.एफ.आर.आई. परिसर में प्राथमिकता के आधार पर लैंटाना-आक्रमित भूखंड के उद्धार और हटाए गए लैंटाना की बहाली हेतु प्रायोगिक भूखंड को स्थापित किया गया साथ ही लैंटाना सेलुलोलिसिक सामग्री से चारकोल भी तैयार किया गया।



श्री नीरज प्रजापति, वैज्ञानिक बी

महुआ लॉगिफोलिया की आसवन प्रक्रिया का शोधन

महुआ निर्मित मदिरा की आसवन प्रक्रिया को परिशोधित करने के लिए अध्ययन शुरू किया गया। कृत्रिम किण्वन और पारंपरिक विधि के विभिन्न सांद्रता के साथ प्रयोग किए गए- अवायवीय और वायवीय स्थितियों के तहत किण्वन प्रयोगशाला में मदिरा को आसुत करके उनके विभिन्न भौतिक गुणों- गंध और रंग का मूल्यांकन भी किया गया। जिसमें विभिन्न आसवनों (0.051 - 0.095) के अवशोषण मदिरा की रासायनिक गुणवत्ता में भिन्नता को दर्शाता है।



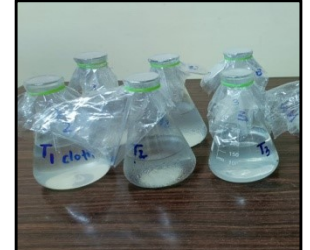
वायवीय परिस्थितियों में
महुआ के फूलों का
किण्वन



किण्वक की विभिन्न सांद्रताओं के साथ
अवायवीय परिस्थितियों में किण्वन



किण्वित महुआ फूलों का आसवन



आसवित मदिरा

नीलू सिंह, वैज्ञानिक जी एवं समूह सम0(अनु0)

सागौन के कीट-कीटों पर पौधा आधारित कीटनाशकों का प्रयोग

लक्ष्य आधारित जैव कीटनाशकों की विभिन्न सांद्रता की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए बरगी स्थित बरबटी गांव के सागौन प्रयोगात्मक क्षेत्र में फील्ड ट्रेल्स आयोजित किए गए। प्रयोगों से ज्ञात हुआ कि महुआ बीज के अर्क जिसकी 1 प्रतिशत सांद्रता ने 49.06 % और 50.88 % लार्वा मृत्यु दर दिखाई, जबकि जेट्रोफा के बीज के अर्क ने सागौन निष्पत्रक (*हिबलियाँ पुररा*) और सागौन पत्रकंकालक (*शूटेक्टोना मैकेरलिस*) के विरुद्ध क्रमशः 52.05 % और 54.24 % लार्वा मृत्यु दर दिखाई।



सागौन के प्रमुख कीट-पतंगों के विरुद्ध
चयनित जैव-कीटनाशकों का छिड़काव



प्रयोगात्मक क्षेत्र का अवलोकन

मृदा आधारित जैव परीक्षण का कार्य कांचागांव सागौन नर्सरी, मंडला (म.प्र.) में किया गया ताकि सफेद ग्रब का सागौन के पौधे पर महुआ और जेट्रोफा के बीजों के अर्क का प्रभाव पता लगाया जा सके। परिणामों से पता चला है कि *जेट्रोफा करकस* के बीज के अर्क की 1% सांद्रता में 10.0% ग्रब मृत्यु की दर है, जबकि *मधुका इंडिका* बीज के अर्क ने उपचार के बाद 72 घंटों में 7.5% ग्रब मृत्यु दर दर्शायी।



प्रयोग के संचालन के लिए एकत्रित सफेद ग्रब का
कार्य



सफेद ग्रब के खिलाफ लक्षित जैव कीटनाशकों हेतु
मिट्टी आधारित जैव परख का कार्य

बांस फाइलोडी या विचेस ब्रूम (witches broom) : डेंड्रोकैलामस स्ट्रिक्टस में एक उभरता हुआ खतरा

डेंड्रोकैलामस स्ट्रिक्टस नीस, (ठोस या कलकत्ता बांस) भारत में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह कागज उद्योग में लुगदी बनाने, रेयान, पेपर मिल, घर निर्माण और फर्नीचर जैसे विभिन्न उद्देश्यों के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। फाइटोप्लाज्मा रोगों के लिए इसकी संवेदनशीलता, विशेष रूप से वानस्पतिक प्रसार को शामिल करना, इसकी उपज पर महत्वपूर्ण प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जिससे इसकी खेती में लगी आबादी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है।

फाइटोप्लाज्मा बैक्टीरिया, जिनमें कोशिका भित्ति नहीं होती है, जो पौधों के फ्लोएम में रहते हैं और स्वाभाविक रूप से फ्लोएम-फीडिंग कीड़ों द्वारा प्रेषित होते हैं। इन जीवाणुओं की कृत्रिम परिवेश में सफलतापूर्वक खेती नहीं की गई है, इसलिए उन्हें "कैंडिडेटस (सी.ए.) फाइटोप्लाज्मा एसपीपी" जीनस के भीतर वर्गीकृत किया गया है। फाइटोप्लाज्मा से संक्रमित पौधे महाराष्ट्र के अमरावती क्षेत्रों में पीली, पौरुष, छोटी पत्ती, फाइलोडी, विचेस ब्रूम (witches broom) पत्तियों या अंकुरों का रंग बदलना, पत्ती कर्लिंग या क्यूपिंग, शीर्षस्थ प्रसार और सामान्यीकृत स्टंटिंग या गिरावट सहित विभिन्न लक्षण प्रदर्शित करते हैं। कैंडिडेटस फाइटोप्लाज्मा, ऑरेंटिफोलिया (16SrII समूह) भारत में विचेस ब्रूम डिजीज ऑफ बैम्बू (डेंड्रोकैलामस स्ट्रिक्टस) से जुड़ा है यह पहली बार अमित यादव और अन्य द्वारा रिपोर्ट किया गया (2015)।

बांस पारिस्थितिकी तंत्र और आसपास के क्षेत्रों में वैकल्पिक परपोषी पादप और कीट वैक्टर हेतु अलक्षणीय और लक्षणीय पौधे दोनों की लगातार जांच करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि फाइटोप्लाज्मा के नए रूप लगातार उभर कर आ रहे हैं। फाइटोप्लाज्मा रोग से बांस की प्रजातियों का निदान और फाइटोप्लाज्मा कीट वैक्टर के प्रबंधन से इस बीमारी के प्रति इसकी संवेदनशीलता कम करने में मदद मिलेगी।



अमरावती, भारत में कैंडिडेटस फाइटोप्लाज्मा से जुड़े विशिष्ट फाइलोडी लक्षण दिखाने वाले संक्रमित डी. स्ट्रिक्टस पौधे। संक्रमित पौधे (ए), एकल शाखा (बी एंड सी) और नोड (डी) पर प्रचुर मात्रा में जुताई के साथ प्रोलिफेरेटिव शाखा का दृश्य।

डॉ. दर्शन के वैज्ञानिक बी, डॉ. एस.एन. मिश्रा वैज्ञानिक सी और श्री आकाश

मध्य भारत में *टूना सिलियाटा* और *चुक्रसिया टेबुलरिस* के संतति परीक्षणों की स्थापना

टी. सिलियाटा और *सी. टेबुलेरिस* काफी तेजी से बढ़ने वाली प्रजातियाँ हैं। जिनका वितरण उप-हिमालयी पथ, पूर्वी और पश्चिमी घाटों और भारतीय प्रायद्वीप के पहाड़ी क्षेत्र में होता है। मध्य भारतीय परिस्थितियों में इन प्रजातियों के विकास के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए, माह अगस्त, 2022 में छिंदवाड़ा और जबलपुर में *टी. सिलियाटा* के दो परीक्षण और *सी. टेबुलेरिस* हेतु एक परीक्षण किया गया। प्रत्येक परीक्षण में विभिन्न स्थानों से चयनित उक्त प्रजातियों की 30 प्रजातियाँ शामिल हैं जिन्हें उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, असम और चंडीगढ़ से चयनित किया गया तथा इनके परीक्षण एफ. आर.आई., देहरादून एवं टी.एफ.आर.आई., जबलपुर के सहयोग से स्थापित किए गए।



डॉ. नसीर मोहम्मद, वैज्ञानिक ई

मध्य भारतीय परिस्थितियों में *कैसुरीना* क्लोनोनों का क्षेत्र परीक्षण

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना-01 के तहत मध्य भारत में इसके विकास प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए माह अगस्त, 2022 के दौरान आई.एफ.जी.टी.बी., कोयंबटूर द्वारा विकसित *कैसुरीना इक्विसेटिफोलिया* क्लोन के तीन परीक्षण स्थापित किए गए (विभिन्न रोपण वातावरण और अंतिम उपयोगकर्ता अनुप्रयोगों के लिए *कैसुरीना* के क्लोन और बीज स्रोतों का परीक्षण भी किया गया)।



जबलपुर, मध्य प्रदेश में एक वर्षीय क्लोनल परीक्षण
(*कैसुरीना इक्विसेटिफोलिया*)



जबलपुर, मध्य प्रदेश में क्लोनल *कैसुरीना*
इक्विसेटिफोलिया का रखरखाव

डॉ. नसीर मोहम्मद, वैज्ञानिक ई

एफ.डी.सी.एम., महाराष्ट्र के क्षेत्रों में सागौन के उत्तक संवर्धन क्लोनो का वृक्षारोपण

वन आनुवांशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयंबटूर ने गुणवत्ता वाले सागौन उत्पादन के लिए उत्तक संवर्धन की तकनीक के माध्यम से उन्नत सागौन क्लोन विकसित किए गए हैं जो कि गोंदिया के जंगलों में एफ.डी.सी.एम., महाराष्ट्र द्वारा प्रदान की गई 5 हेक्टेयर भूमि में छह अलग-अलग क्लोनो के साथ रोपित किया गया है। इनका बकलसारा बीट (सालेकासा), जामदी बीट (सालेकासा), बगाधबंध (जामड़ी), चिचगढ़ और अर्जुनी में वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण अनियमिताकार खंड संरचना में 7 क्लोन और 7 प्रतिकृतियों के साथ किया गया है।



सालेकासा रेंज, गोंदिया, महाराष्ट्र में उत्तक संवर्धन स्थापित सागौन के क्लोन का पौधारोपण

डॉ. फातिमा शिरीन, वैज्ञानिक जी

बेहतर पेड़ों के चयन के माध्यम से अजेडेरिक्टा इंडिका का आनुवंशिक सुधार

अजेडेरिक्टा इंडिका (नीम) के 100 कैंडिडेट प्लस ट्री (सी.पी.टी.) को 8 कृषि-जलवायु क्षेत्रों से चुना गया। औसत परिधि, पेड़ की ऊँचाई, जी.बी.एच. और औसत शीर्ष क्रमशः 10-27 मीटर, 1.5-11.5 मीटर, 3.8-16.4 मीटर और 85-26 सेमी के बीच पाए गए। चयनित सी.पी.टी. के बीजों में तेल की मात्रा 2.66% से 67.91% के बीच थी।



नीम के फलों का संग्रह और नीम के फलों का गूदा निकालना



नीम के फलों का रूपात्मक माप



नीम के तेल निकालने की विधि

अवक्रमित स्थलों का पुनर्वास- लौह और मैंगनीज अयस्क की खदानें

परामर्श परियोजना "ओडिशा राज्य के क्यॉंझर जिले में दुबना-सकरधी लौह और मैंगनीज अयस्क की खदानों में सविराम अवधि के लिए अल्प आवर्तन वानिकी फसलों को उगाने" के तहत लौह और मैंगनीज अयस्क खदानों पर रोपण के लिए स्थल-विशिष्ट अल्प आवर्तन वानिकी फसलों का चयन एवं अनुशंसित मिट्टी के नमूने तथा मिट्टी के भौतिक-रासायनिक गुणों के निर्धारण करने के लिए एकत्रीकरण का कार्य किया गया है।



दुबना-सक्राधि लौह एवं मैंगनीज अयस्क खदानों से मिट्टी के नमूने एकत्रीकरण का कार्य

डॉ. जंगम दीपिका, वैज्ञानिक बी

ओरोक्सिलम इंडिकम और यूरेरिया पिक्टा का अंकुर उत्पादन

दशमूल समूह की दो प्रजातियां कमशः ओरोक्सिलम इंडिकम (शिवनाग) और यूरेरिया पिक्टा (प्रष्णा पर्नी) की खेती की तकनीकों को मानकीकृत करने के लिए किए गए प्रयोग।



यूरेरिया पिक्टा पौध का उत्पादन

ओरोक्सिलम इंडिकम पौध का उत्पादन

डॉ. हरिओम सक्सेना, वैज्ञानिक ई

कैरिसा कैरंडस (करोंदा) निर्मित नए मूल्य वर्धित उत्पाद



KARONDA
ACHAR

KARONDA JAM

KARONDA
SQUASH

KARONDA
CHURNA

KARONDA
MURABBA

CHERRY
KARONDA

KARONDA
KATTI-MITHI
GOLI

आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

जागरूकता और प्रदर्शन कार्यक्रम

उ.व.अ.सं. के कर्मचारियों ने 16.8.2022 को संस्थान परिसर में वन विस्तार प्रभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. ननीता बेरी द्वारा आयोजित 'पार्थेनियम जागरूकता दिवस' में भाग लिया। खरपतवार अनुसंधान निदेशालय जबलपुर द्वारा तैयार एवं साझा किये गये पोस्टर की सहायता से पार्थेनियम जागरूकता का कार्य किया गया। टी.एफ.आर.आई., जबलपुर के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, परियोजना अध्ययताओं और अन्य कर्मचारियों द्वारा उन्मूलन गतिविधियों को पूरा किया गया।



नवोदय विद्यालय जबलपुर के छात्रों ने 29 अगस्त 2022 को प्रकृति कार्यक्रम के तहत टी.एफ.आर.आई. का दौरा किया, जहां उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों और अधिकारियों के साथ संवाद स्थापित किया।

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत गतिविधियां

"आजादी का अमृत महोत्सव (ए.के.ए.एम.)" के तहत वन पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने 3 अगस्त 2022 को कोसम घाट की यात्रा का आयोजन किया।



डेमो विलेज की स्थापना

डेमो विलेज की स्थापना के लिए, डॉ. ननीता बेरी, प्रभागाध्यक्षा, वन विस्तार प्रभाग, ने 31 अगस्त, 2022 को तिलहरी और छेवला गाँव के किसानों और जन प्रतिनिधियों के साथ संवाद बैठक का आयोजन किया, ताकि गरीब किसानों के लाभ और आय सृजन हेतु टी.एफ.आर.आई. प्रौद्योगिकियों को लागू किया जा सके।



अनावरण भ्रमण

“प्रकृति कार्यक्रम” के तहत, जवाहर नवोदय विद्यालय, बरगी, जबलपुर के छात्रों (10 वीं और 12 वीं) ने 29 अगस्त 2022 को टी.एफ.आर.आई., जबलपुर का दौरा किया।

इस कार्यक्रम का संचालन वन विस्तार विभाग की अध्यक्षा डॉ. ननिता बेरी, वैज्ञानिक एफ द्वारा किया गया।

श्री मनीष कुमार विजय, वैज्ञानिक-बी ने एकल उपयोग प्लास्टिक : विषय पर छात्रों के लिए संभावित विकल्प पर एक वार्ता प्रस्तुत की।



गणमान्य व्यक्तियों का दौरा



सुश्री प्रियंका दास आई.ए.एस., मिशन निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, मध्यप्रदेश द्वारा उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया गया।



डॉ. आशुतोष वर्मा, प्रोफेसर, आई.आई.एफ.एम. , भोपाल द्वारा उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया गया।



बांदा कृषि विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश के संकाय सदस्यों ने टी.एफ.आर.आई. के साथ हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के तहत 25 अगस्त, 2022 को टी.एफ.आर.आई. का भ्रमण किया। डॉ. ननिता बेरी, प्रभागध्यक्षा, वन विस्तार प्रभाग ने संस्थान द्वारा विभिन्न विषयों पर होने वाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला।



लाख की खेती पर प्रशिक्षण



टी.एफ.आर.आई., जबलपुर के तकनीकी मार्गदर्शन में आई.एफ.एफ.डी.सी., मध्य प्रदेश के बरकोटी कलां और जैतपुर कछिया सोसाइटियों में लाख की खेती पर एक क्षेत्र प्रशिक्षण सह प्रदर्शन आयोजित किया गया। जिसमें कार्यक्रम का संचालन डॉ. ननिता बेरी, वैज्ञानिक एफ एवं प्रभागध्यक्षा एवं श्री मनीष कुमार विजय, वैज्ञानिक बी, वन विस्तार प्रभाग टी.एफ.आर.आई जबलपुर ने संयुक्तरूप से किया। श्रीमती संजू त्रिपाठी, परियोजना समन्वयक, श्रीमती द्रौपदी धुर्वे, कनिष्ठ प्रबंधक, श्री दीनानाथ सोलंकी, निदेशक, जैतपुर सोसाइटी, श्री अनिल मिश्रा, सचिव, जैतपुर और बरकोटी कला सोसायटी भी इस अवसर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम में 40 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया, जिसमें श्री अल्फ्रेड फ्रांसिस, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी और श्री मनोज जोशी, तकनीकी अधिकारी, टी.एफ.आर.आई द्वारा सहायता प्रदान की गई। इसके अलावा, आई.एफ.एफ.डी.सी., के तहत चलने वाली अन्य सोसायटियों में भी लाख की खेती की तकनीक का विस्तार किया जाएगा ताकि किसानों को लाख के टीकाकरण के 8 महीने के भीतर ही अतिरिक्त आय प्राप्त हो सके।

सागौन नर्सरी में एकीकृत सफेद ग्रब प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

म.प्र. मंडला मोहगाँव परियोजना खण्ड में वन महकमें के प्रथम पंक्ति के कर्मचारियों के लिए सागौन नर्सरी में एकीकृत सफेद ग्रब प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें 35 वन अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री राकेश कोडापे, मंडला के मंडल प्रबंधक (डी.एम.) ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। डॉ. मोहन सी, वैज्ञानिक-बी और श्री राम भजन सिंह, तकनीकी अधिकारी ने सागौन नर्सरी में सफेद ग्रब के पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन का प्रदर्शन किया।



सफेद ग्रब के पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन पर एस.एफ.डी. के अधिकारियों के साथ बातचीत



प्रतिभागियों के साथ गुप फोटो



सफेद ग्रब संक्रमित सागौन नर्सरी कंचनगांव,म.प्र.



सफेद ग्रब संक्रमित सागौन नर्सरी कंचनगांव,म.प्र.



श्री मनीष कुमार विजय, वैज्ञानिक-बी के द्वारा 11वीं राष्ट्रीय बीज सम्मेलन 2022 प्रतियोगिता में "वृक्ष जनित तेल संसाधन संभावनाएं और चुनौतियाँ" पर एक प्रमुख पत्र प्रस्तुत किया गया और "अच्छी गुणवत्ता वाले बीज की कमी वृक्षों से उत्पन्न तिलहन (टी.बी.ओ.) की खेती के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती" पर पोस्टर प्रस्तुत किया जिसे आर.वी.एस.के.वी.वी., ग्वालियर और आई.सी.ए.आर.-एन.एस.आर.टी.सी. द्वारा 21 से 23 अगस्त 2022 ने आयोजित किया।

डॉ. ननिता बेरी, वन विस्तार प्रभाग की अध्यक्ष और प्रशिक्षण समन्वयक ने बांस कारीगरों के लिए 'बांस हस्तशिल्प' पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।



भारत में काष्ठ, ईंधन लकड़ी और चारे की मांग और आपूर्ति के आकलन और सकल घरेलू उत्पाद के लिए वनों के मूल्यांकन के लिए अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं (ए.आई.सी.आर.पी.), के तहत जी.डी.पी. और हरित जी.डी.पी. पारिस्थितिकी तंत्र की वस्तुओं और सेवाओं के भुगतान बाबत उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टी.एफ.आर.आई.), जबलपुर में चार दिवसीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए.आर.एस., निदेशक टी.एफ.आर.आई., जबलपुर एवं डॉ. राजीव पांडे, राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक और वैज्ञानिक, आई.सी.एफ.आर.आई. (भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद) देहरादून ने राष्ट्रीय स्तर पर दो महत्वपूर्ण परियोजनाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कार्यशाला में की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों और उसमें विभिन्न प्रतिभागियों की भूमिकाओं के बारे में भी विचार साझा किये। इस कार्यशाला में आई.सी.एफ.आर.आई. अंतर्गत देहरादून, हैदराबाद, कोयंबटूर, रांची, जोरहाट, शिमला, बंगलौर, अगरतला स्थित संस्थानों एवं केंद्रों के 20 वैज्ञानिकों, अधिकारियों और शोधार्थियों ने भाग लिया है।



मासिक संगोष्ठी – “वन बहाली में बीज विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग एक रास्ता आगे” श्री मनीष कुमार विजय, वैज्ञानिक-बी द्वारा व्याख्यान दिया गया।

मासिक संगोष्ठी – “पौधों के कोशिका विज्ञान पर प्राकृतिक और मानवजनित प्रभाव एक साइट-आनुवंशिक दृष्टिकोण” श्री कौशल त्रिपाठी, वैज्ञानिक बी द्वारा व्याख्यान दिया गया।

प्रशिक्षण – श्री ए. जे. के. असैया, वैज्ञानिक-सी द्वारा आदर्श महाविद्यालय, धामन गाँव, अमरावती विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित “आई.पी.आर. और पेटेंटिंग रोड मैप टू मेक इंडिया नेक्स्ट इनोवेशन हब” पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया।

संगोष्ठी – डॉ. ननिता बेरी, वैज्ञानिक-एफ और श्री ए. जे. के. असैया वैज्ञानिक-सी द्वारा एफ.आर.आई., देहरादून द्वारा आयोजित “जलवायु परिवर्तन शमन के लिए कृषि वानिकी” पर ऑनलाइन संगोष्ठी में भाग लिया।

कार्यशाला – डॉ. दर्शन के, वैज्ञानिक-बी द्वारा “माइक्रोएशिया – आरंभकर्ताओं के लिए मशरूम की खेती पर कवकपीडिया कार्यशाला” (ऑनलाइन) में भाग लिया।

नवीन प्रकाशन

शोध पत्र

- खोबरागड़े एन.डी. और पटेल पी. 2022। *टर्मिनलिया चेबुला* रेट्ज के बीज अंकुरण और अंकुर वृद्धि पर पूर्व उपचार का प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड एंड यूनिवर्सल रिसर्च*, वॉल्यूम IX, अंक II] मार्च – अप्रैल, 9– 13 पीपी।
- खोबरागड़े एन.डी. और कुंभारे वी. 2022. कैंडिडेट प्लस ट्री से एकत्रित *बुकनेनिया लेजन* बीजों की पोषण संरचना। *इंडियन जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन*, खंड 9, अंक 1.
- सक्सेना, एच.ओ., एन.डी. खोबरागड़े, समीक्षा परिहार, एम. कुंडू, जी. राजेश्वर राव और गणेश पवार। 2022. *टर्मिनलिया बेलिरिका* (गार्टन) रॉक्सबी में रासायनिक और रूपात्मक विविधताएं। – मध्य भारत से वाणिज्यिक आयुर्वेदिक सूत्रीकरण त्रिफला की एक प्रजाति। *पर्यावरण संरक्षण जर्नल*, खंड I, अंक 4.
- सक्सेना एच.ओ., परिहार एस., पवार जी. और साहू वी.आर., 2022। उच्च प्रदर्शन पतली परत क्रोमेटोग्राफी विधि विकास और *स्टरकुलिया यूरेन्स* रॉक्सबी के गम नमूनों में ग्लुकोरोनिक एसिड की मात्रा का ठहराव के लिए सत्यापन। *जेपीसी-जर्नल ऑफ प्लानर क्रोमेटोग्राफी-मॉडर्न टीएलसी*, 35: 153–159
- सक्सेना एचओ, खोबरागड़े, एन.डी., परिहार एस, कुंडू एम, राव जी आर और पवार जी, 2022। *टर्मिनलिया बेल्लिरिका* (गार्टन) रॉक्सबी में रासायनिक और रूपात्मक विविधताएं। – मध्य भारत से वाणिज्यिक आयुर्वेदिक सूत्रीकरण त्रिफला की एक प्रजाति। *पर्यावरण संरक्षण जर्नल*, 23(1-2): 410–416
- सक्सेना एच.ओ., परिहार एस. और पवार जी., 2022। *डिलेनिया पेंटागिना* रॉक्सबी के विभिन्न संयंत्र भागों में बेटुलिन का मात्रात्मक अनुमान। मान्य एचपीटीएलसी विधि के माध्यम से। *इंडियन फॉरेस्टर*, 148(4): 441–446।

अन्य प्रकाशन

- राव, जी.आर, शेखर ए, और विजय एम.के. 2022. वृक्ष जनित तेल संसाधन संभावनाएं और चुनौतियां। आरबीएसकेवीवी और आईसीएआर-एनएसआरटीसी द्वारा आयोजित 11वीं राष्ट्रीय बीज कांग्रेस 2022 के दौरान जारी पुस्तक में प्रकाशित लीड पेपर
- मोहन सी. और एस. सौम्या प्रिया। 2022. पर्यावरण हितैषी कीट प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ – एक सिंहावलोकन। *तमिल भाषा में कालनादई वेलानमई*। 4(1): 40– 43.
- मोहन सी. 2022. संग्रहित उत्पाद कीट प्रबंधन में हालिया प्रगति। *कृषि और खाद्य ई न्यूजलेटर*। 4 (7): 380– 385।
- इरशाद अली सौदागर और फातिमा शरीन। 2022. मध्य भारत के लिए बांस की वकालत। *इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल फॉरेस्टर्स* का समाचार पत्र। खंड-11 अंक-2.

आनुवांशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग, उ.व.अ.सं., जबलपुर में बिक्री के लिए उपलब्ध पौधों की प्रजातियाँ एवं संख्या

उन्नत किस्में- प्रति पौधा लागत- रु. 50/पौधे

क्रमांक	प्रजातियाँ	पौधों की संख्या
1.	राउवोल्फिया सर्पेन्टाइना टी.एफ.आर.आई रु.1 (सर्पगंधा)	200
2.	राउवोल्फिया सर्पेन्टाइना टी.एफ.आर.आई रु.2 (सर्पगंधा)	150

बांस प्रजाति. रु. 25/पौधे

क्रमांक	प्रजातियाँ	पौधों की संख्या
1.	बम्बुसा बम्बोस (कटंगा)	1350
2.	बंबुसा वल्गारिस (अंत. हरा)	110
3.	बंबुसा नूतन	75
4.	डेड्रोकेलामस रिद्रक्टस (लाठी बांस)	940
5.	डेड्रोकेलामस लॉन्गिसपैथस	100

पेड़ की प्रजातियाँ और औषधीय पौधे- रु.25/पौधे

क्रमांक	प्रजातियाँ	पौधों की संख्या
1.	टेक्टोना ग्रैंडिस (टीकएसागौन)	200
2.	डलबर्जिया लेटीफोलिया (काला शीशम, रोजवुड)	200
3.	सेलेस्ट्रस र्पेनीकुलाटस (मालकागिनी, ज्योतिषमती)	100
4.	प्लंबैगो जेलेनिका (चित्रक)	100
5.	ओरोक्सिलम इंडिकम (शिवनाग)	50
6.	टेमेरिन्डस इंडिका (इमली)	150
7.	अजेडेरिक्टा इंडिका (नीम)	50



गेस्ट हाउस सुविधाएं और शुल्क

क्रमांक	पात्र व्यक्तियों की श्रेणी	शासकीय कार्य के दौरान किराया (रु०)		शासकीय कार्य के उपरांत किराया (रु०)	
		Room	Suit	Room	Suit
1	क. आई. सी. एफ. आर. ई. के अधिकारियों हेतु ख. कन्सल्टेंट्स एवं अनुसंधान अध्येता आई. सी. एफ. आर. ई. एवं उसके संस्थानों सहित तथा डीम्ड यूनिवर्सिटी हेतु ग. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली के अधिकारियों एवं एक्सपर्ट हेतु घ. राज्य वन विभाग के अधिकारियों हेतु ड. आई. सी. एफ. आर. ई. के भूतपूर्व अधिकारियों एवं भूतपूर्व प्रतिनियुक्त के अधिकारियों हेतु	150	200	200	200
2	आई. सी. एफ. आर. ई. के परिवारजन वर्तमान / भूतपूर्व - क. आई. सी. एफ. आर. ई. के भूतपूर्व अधिकारियों / कर्मचारियों हेतु ख. आई. सी. एफ. आर. ई. के भूतपूर्व प्रतिनियुक्त के अधिकारियों / कर्मचारियों हेतु			200	300
3	क. स्वायत्त परिषदों एवं वन अनुसंधान (एफ.आर.आई.) डीम्ड यूनिवर्सिटी के अंतर्गत आने वाले विश्वविद्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों हेतु ख. केंद्र एवं राज्य के अधिकारी/कर्मचारी - राज्य वन विभाग के अलावा	200	300	400	500
4	आई. सी. एफ. आर. ई. संस्थानों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों हेतु शुल्क			800	750



उपर दी गई तालिका के अलावा देय रखरखाव शुल्क (मेन्टेनेंस चार्ज) इस प्रकार है :-

आवास का प्रकार	रखरखाव शुल्क (मेन्टेनेंस चार्ज) ए.सी. / हीटर सहित (रु.)
रूम	200
सूट	250

संरक्षक

डॉ. जी. राजेश्वर राव, ए.आर.एस.

निदेशक, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,
जबलपुर।

संपादक

श्रीमती नीलू सिंह वैज्ञानिक-जी

समूह समन्वयक अनुसंधान,
उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,
जबलपुर।

सह संपादक

श्री. अजिन शेखर

वैज्ञानिक-बी, एफ.ई.सी.सी., उ.व.अ.स, जबलपुर
श्री राठौड़ दिग्विजयसिंह उमेदसिंह
वैज्ञानिक-बी, एस.एफ.एम और कृषि वानिकी प्रभाग, उ.व.अ.सं., जबलपुर

तकनीकी सहयोग

श्री हीरालाल असाटी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, उ.व.अ.सं., जबलपुर
श्रीमती निकिता राय
वरिष्ठ तकनीशियन, उ.व.अ.सं., जबलपुर

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

समूह समन्वयक अनुसंधान

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान,

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

पी.ओ. — आर.एफ.आर.सी., मंडला रोड, जबलपुर— 482 021, मध्य प्रदेश

फोन नंबर— 91-761-2840010(ओ) फैक्स:— 91-761-2840484

समूह समन्वयक (अनुसंधान) फोन 0761-2840003

Email: Website :- <http://tfri.icfre.gov.in> Email:- dir_tfri@icfre.org,
groupco_tfri@icfre.org



संस्थान के बारे में

मध्य प्रदेश स्थित उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, अप्रैल 1988 में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्यों सहित मध्य भारत में वनों और वानिकी क्षेत्रों के सतत् विकास के लिए मजबूत अनुसंधान सहायता प्रदान करने के लिए अस्तित्व में आया।

यह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून (उत्तराखंड) के अंतर्गत नौ क्षेत्रीय संस्थानों में से एक है।

कौशल विकास के लिए वन अनुसंधान केंद्र, छिंदवाड़ा, 30 मार्च 1995 को अस्तित्व में आया। इसे 3 जनवरी 1996 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का एक दूरस्थ केंद्र घोषित किया गया।



अनुसन्धान कार्य के प्रमुख क्षेत्र

- ❖ विंध्य, सतपुड़ा व मैकल पहाड़ियों व पश्चिमी घाटों के पारिस्थितिकी की पूर्वअवस्था एवं खनन क्षेत्रों का पुनर्वास
- ❖ कृषि वानिकी प्रारूपों का विकास और प्रदर्शन
- ❖ वन संरक्षण
- ❖ जैव उर्वरक और जैव कीटनाशक
- ❖ अकाष्ठ वन उत्पाद
- ❖ जैव विविधता मूल्यांकन, संरक्षण और विकास
- ❖ सतत् वन प्रबंधन
- ❖ रोपण स्टॉक में सुधार
- ❖ जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण सुधार
- ❖ वन उत्पादों का विकास

